

---

.. shivaaShTakam ..

॥ शिवाष्टकम् ॥

---

श्रीगणेशाय नमः ।

प्रभुमीशमनीशमशेषगुणं गुणहीनमहीश-गलाभरणम् ।  
रण-निर्जित-दुर्जयदैत्यपुरं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ १ ॥  
गिरिराज सुतान्वित-वाम तनुं तनु-निन्दित-राजित-कोटीविधुम् ।  
विधि-विष्णु-शिवस्तुत-पादयुगं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ २ ॥  
शशिलाञ्छित-रञ्जित-सन्मुकुटं कटिलम्बित-सुन्दर-कृत्तिपटम् ।  
सुरशैवलिनी-कृत-पूतजटं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ३ ॥  
नयनत्रय-भूषित-चारुमुखं मुखपद्म-पराजित-कोटिविधुम् ।  
विधु-खण्ड-विमण्डित-भालतटं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ४ ॥  
वृषराज-निकेतनमादिगुरुं गरलाशनमाजि विषाणधरम् ।  
प्रमथाधिप-सेवक-रञ्जनकं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ५ ॥  
मकरध्वज-मत्तमतङ्गहरं करिचर्मगनाग-विबोधकरम् ।  
वरदाभय-शूलविषाण-धरं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ६ ॥  
जगदुद्भव-पालन-नाशकरं कृपयैव पुनस्त्रय रूपधरम् ।  
प्रिय मानव-साधुजनैकगतिं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ७ ॥  
न दत्तन्तु पुष्पं सदा पाप चित्तैः पुनर्जन्म दुःखात् परित्राहि शम्भो ।  
भजतोऽखिल दुःख समूह हरं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ८ ॥  
॥ इति शिवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar@hotmail.com

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

Last updated October 2, 2004